

भोजनरस विभाव संधि

हरिकथाम्भृतसार गुरुगळ
करुणदिंदापनितु पैळुवे
परम भगवद्धक्तरिदनादरदि कैळुवुदु

वनजजांडदोळुळळखिल चौ
तनरु भुंजिप चतुरविध भो
जनपदाथदि चतुर विध रसरूप तानागि
मनके बंदुदनुंडुणिसि सं
हननकुपचय करणकानं
दनिमिषरिगात्मप्रदर्हन सुखवनीव हरि ४-१

नीडदंददलिष्प लिंगके
षोडशात्मक रसविभागव
माडि षोडशकलेगळिगे उपचयगळने कोडुत
क्रोड एप्पत्तेरडु साविर
नाडिगतदेवतेगळोळगि
द्वाङुतानंदात्म चरिसुव लोकदोळु तानु ४-२

द्वारुरसवैदेनिसि मूव

त्तारु साविर स्त्री पुरुष नाडियङ्गु तद्रूप
धारकनु तानागि सर्वश
रीरगळलि अहश्चरात्रि वि
हारमाळ्पनु छङ्गतियेब सुनामदिं करेसि ४-३

आरुरस सत्वादि भैददि
आरु मूरागिहवु सरा
सार नीताप्रचुर खंडाखंड चित्प्रचुर
ईरधिक एप्पत्तुसाविर
मारमणन रसाख्यरूप श
रीरदलि भौज्य सुपदाथदि तिळिदु भुंजिसुवुदु ४-४

ईरगत रसरूपगङ्गु मु
न्नूरु म्यालैवत्तु नालकु
चारु छङ्गतगत रूपगङ्गु इप्पत्तरोंभत्तु
सार गुडदोळगैदु साविर
नूरवोंदु सुरूप द्विसह
सारेरडु शत पंचविंशति रूप फलगळलि ४-५

विशद स्थिर तीणवु निरहर
रसदोळु मूरैदु साविर

त्रिशतनव रूपगळ चिंतिसि, भुंजिपुदु विषय
श्वसन तत्वेशरोळगिद्धी
पेसरिनिंदलि करेसुवनु धे
निसिदरी परि मनके पोळेवनु बल्ल विबुधरिगे ४-६

कपिल नरहरि भागवत्रय
वपुष नैत्रदि नासिकास्यदि
शफरनामक जिह्वेयलि दंतदलि हंसाख्य
त्रिपदिपाद्य हयास्य वाच्यदो
ळपरिमित सुखपुण संतत
कङ्गणरोळगिद्धवरवर रस स्वीकरिसि कोडुव ४-७

निरुपमानम्दात्म हरि सं
करुषण प्रद्युम्न रूपदि
इरुतिहनु भोक्त्तिगळोळगे तच्छक्तिदनु येनिसि
करेसुवनु नारायणनिरु
झेरडु नामदि भोज्य वस्तुग
निरुत तपकनागि त्तिप्तियनीव चैतनके ४-८

वासुदेवनु ओळहोरगे अव
काश कोडुव नभस्थनागि र

मासमेत विहार माळपनु पंचरूपदलि
आ सरोरुह संभवा भव
वासवाद्यमरादि चैतन
राशियोळगिहनेंदु अरितवनवने कोविदनु ४-९

वासुदेवनु अन्नदोळु ना
ना सुभयदि संकरुषण कइ
तीश परमान्नदोळु घटतदोळगिष्पननिरुद्ध
आ सुपणांसगनु सूपदि
वासवानुज शाकदोळु मू
लैश नारायणनु सवत्रदलि नेलेसिहनु ४-१०

अगणितात्म सुभौजन पदा
थगळ ओळगे अखंडवादों
दगळिनोळनंतांशदिंदलि खंडनेंदिनिसि
जगदि जीवर त्वप्ति पडिसुव
स्वगत भैदविवजितन ई
बगेय रूपवनरितु भुंजिसि अपिसुवनडिगे ४-११

ई परियलरितुंब नर नि
त्योपवासि निरामयनु नि

ष्पापि नित्य महत्सुयज्~नागळाचरिसिदवनु
पोपुदिप्पुदु बप्पुदेल्ल र
मापतिगधिश्ठानवेन्नु कइ
पापयोनिधि मातनालिसुतिह जननियंते ४-१२

आरेरदु साविरथ मेलिन्नोर ऐवथ्थोम्धु रूपधि
सारभोकथनिरुद्ध धेवनु अन्नमयनेनिप
मूरेरदुवरे साविरथ मेल् मूरठिक नाल्वथ्थु रूपधि
थोरुथिह प्रैयुम्न जगधूलु प्राणमयनागि ४-१३

एरडु कोशद ओळहोरगे सं
करुषणेदु सुलअदरव
त्तेरडु साविरदेळधिक शतरूपगळ धरिसि
करेसिकोंब मनोमयनु एं
दरविदूरनु ईरेरडु सा
विरद मुन्नोराद मेल्नाल्कधिक एप्पत्तु ४-१४

रूपदिं विज्~नान मयनेब्
ई पेसरिनिं आसुदेवनु
व्यापिसिह महदादि तत्वव तत्पतिगळोळगे
ई पुरुषनामकन शुभस्वे

दापक्षेनिसि रमांब ता ब्र
हमापरोइगळादवर लिंगांग केडिसुवळु ४-१५

ऐदुसाविर नूर इप्प
त्तैदु नारायणन रूपव
ता धरिसिकोङ्डनुदिनदि आनंदमयनेनिप
ऐदु लअद मौले एंभ
त्तैदु साविर नाल्कु शतगळ
ऐदु कोशात्मक विरिंचांडोळु तुंबिहनु ४-१६

नूर्वोंदु सुरूपदिं शां
तीरमण तानन्ननेनिपै
नूर मौल्मूरधिकदश प्राणाख्य प्रद्युम्न
तोरुतिहनैवत्तैदु वि
कार मनदोळु संकरुषणै
नूरु चतुराशीति विज्ञानात्म विश्वाख्य ४-१७

मूरु साविरदधशत मे
लीरधिकरूपगळ धरिसि श
रीरदोळगानंदमय नारायणाहवयनु
ईरेरडु साविरद मौल्मु

न्नूरु ऐदु सुरूपदिंदलि
भारतीशनोळिप्प नवनीतस्थ घृतदंते ४-१८

मूर्धिक ऐवत्तु प्राण श
रीरदोळगनिरुद्धनिष्पै
नूरु हन्नोंदधिकपाननोळिप्पै प्रद्युम्न
मूरनेय व्याननोळगैदरे
नूरु रूपदि संकरुषणै
नूरु मूकत्तै दुदाननोळिप्प मायेश ४-१९

मूलनारायणनु ऐव
त्तेळधिक ऐनूरु रूपव
ताळि सवत्रदि समाननोळिप्प सवेश
लीलेगैवनु साविरद मे
लोळु नूहन्नोंदु रूपव
ताळि पंचप्राणरोळु लोकगळ सलहुवनु ४-२०

त्रिनवति स्वरूपात्मकनिरु
द्धनु सदा यजमाननागि
द्वन्द्व यम सोमादि पितॄदेवतेगळिगे अन्न
नेनिपना प्रद्युम्न संकरु

षण विभागव माडिकौं
डुणिप नित्यानंद भोजनदायि तुयाहव ४-२१

षणवतिनामकनु वसु मू
ककण्ण भास्कररोळगे निंतु प्र
पन्न रनुदिन निष्कपट सद्गवित्यलि माळप
पुण्य कमव स्वीकरिसि का
रुण्य सागरना पितङ्गाळिगे
गण्य सुखवित्तवर पोरेवनु एल्ल कालदलि ४-२२

सुतपनेकोत्तर सुपंचा
शतवरण करणदि चतुविं
शति सुतत्वदि धातुगळोळगिद्विरतनिरुद्ध
जतन माळपनु जगदि जीव
प्रतिगळ षणवति नामक
चतुर मूतिगळचिसुवरदरिंदे बल्लवरु ४-२३

अंबुजजांडोदरनु विपिनदि
शबरियेंजलनुंडु गोकुल
दबलेयरनोलिसिदनु इषि पत्नियरु कोट्टन्न
सुभुज ता भुंजिसिद स्वरमण

कुबुजे गंधके ओलिद मुनिगण
विबुधसेवित बिडुवने नावित्त कमफल ४-२४

गणनेयिल्लद परमसुख स
दगुणगणंगळ लोशलोशके
एणेयेनिसदु रमाब्ज भवशक्रादिगळ सुखवु
उणुतुणुतमै मरेदु कइष्णा
पणवेनलु कैकोंबनभक
जननि भोजन समयदलि कैयोड्डुवंददलि ४-२५

जीव कइत कमगळ बिडदे र
मावरनु सईकरिसि फलगळ
नीवनधिकारानुसारदलवरिगनवरत
पावकनु सवस्व भुंजिसि
ता विकारवनैदनोम्मेगु
पावकने पावननेनिप हरियुंबुदेनरिदु ४-२६

कलुष जिहवेगे सुष्ठुभोजन
जल मोदलु विषदोरुवुदु नि
ष्कलुष जिहवेगे सुरस तोरुवुदेल्ल कालदलि
सुललितांगगे सकलरस मं

गळवेनिसुतिहुदन्नमय कै
कोळदे बिडुवने पूतनिय विषमोलेयनुंडवनु ४-२७

पैळलैनु समीरदेवनु
कालकूटवनुंडु लोकव
पालिसिद तद्वासनोवनु अम्झउतनेनिसिदनु
श्री लकुमिवल्लभ शुभाशुभ
जालकमगळुंबनुपचय
देदेक्किगेगळवगिल्लवेदिगु स्वरसगळ बिटु ४-२८

ई परियलच्युतन तत्त
द्रूप तन्नामगळ सले ना
ना पदाथदि नेनेनेनेदु भुंजिसुतलिरु विषय
प्रापक स्थापक नियामक
व्यापकनुयेदरिदु नी नि
लैपनागिरु पुण्य पापगळनपिसवनडिगे ४-२९

ऐदु लएंभत्तरोभ
त्ताद साविरदेळुनूरर
ऐदु रूपव धरिसि भौक्त्तिग भौज्यनेंदेनिसि
श्रीधरा दुगारमण पा

दादि शिरपयंत व्यापिसि
कादुकोऽिह संतत जगन्नाथ विठ्ठलनु ४-३०

www.yousigma.com